International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—2

शोध पत्र- हिन्दी

Oct-Nov—2009

युग चिन्तन और हास्य व्यंग्य

*डॉ. जयश्री बऱ्हाटे

*प्राध्यापक, कला, वाणिज्य व गृहविज्ञान महिला महाविद्यालय, जलगाँव, महाराष्ट्र

साहित्य और समाज एज दुसरे जा आई-ा है। साहित्य मा-ाव जीव-ा जी अभिव्यक्ति है। मा-ाव जीव-ा में आ-ोवाली विसंजतियाँ, दोष, शोषज और भ्रष्टाचार जा चित्रज जब लेजज ज-ो लजता है तब उसजा म-ा आज्ञोश से भर उठता है। उसी आज्ञोश जो जब वह साहित्य में व्यक्त जरता है तब उसे व्यंज्य जहा जाता है। भारतीय जाव्यशास्त्र में स्पष्ट जिया है जि शब्दशक्तियों जे व्यंज्य-ा शक्ति जे व्दारा व्यंज्यार्थ जी व्युत्पति होती है।

व्यंज्य जी व्युत्पति - वि + अंज।[1]

आज युजचि-त-ा जी माँज जे अ-ुसार व्यंज्य जा मूलधर्म प्रहार से सुधार जी तरफ जाता हुआ -जर आता है। 'डॉ. शंजर पुजतांबेजर' -े व्यंज्य जी परिभाषा जरते हुए जहा है - 'व्यंज्य युज जी विसंजतियों जी वैदज्धपूर्ज तीजी अभिव्यक्ति है।'[2] 'हरिशंजर परसाई' स्पष्ट जरते है जि - 'व्यंज्य जीव-ा से साजात्जार जर-ा है, जीव-ा जी आलोच-ा जरता हैं, विसंजतियों, मिज्याचारों और पाजंडों जा पर्दाफाश जरता है।'[3] 'जार्ज मेरिडिथ' व्यंज्य जे बारे में जहते है - 'यदि आप हास्यास्पद जा इत-ा अधिज मज़ाज उडाते हैं जी उसमें दयालुता ही समाप्त हो जाय तो आप व्यंज जी सीमाओं में प्रवेश जर जाते हैं।' व्यंज्य जा प्रारंभ संस्जृत-प्राजृत साहित्य से ही मिलता है। भवभूतिजृत, रामचरित, जालीदास जे जुमारसंभव, मृच्छाजटिज, स्वप्रवासवदत्त में व्यंज्यात्मजता दिजायी देती है। चार्वाज दर्श-ा में पशुबली, पु-र्ज-म, पितृश्राध्द आदि मा-यताओं पर व्यंज्य जसा जया है। अपभ्रंश साहित्य में भी वैदिज जर्मजांड़ पर व्यंज्य प्रस्तुत है।

सरहपा जे पद - बम्हजहि म जाजंत हि भेऊ
एवंइ पढिअउ ज चउ वेउ
महि पाजि जुस लइ पंढत
घर हि बइसी आजी हुजंत
जज्जे विरहह हुअवइ होयें
आक्जि ड़हाविअ जडुअे धूयें।

(ब्राम्हज चारों वेदों जा अध्यय-ा जरजे भी ज्ञा-ा जा भेद -हीं जा-ाते। हाथ में जुश लेजर म-त्र पढ़ते हैं। घर बैठे अज्-ि में आहुति देते है। -िष्फल यज्ञ जरते हैं। और उसजे जडुअे धुएँ से आँजें फोडते है।[5] सरहपा जै-ा दिजम्बरों पर व्यंज्य जरते हुए जहते है जि यदि -ाज्-ा हो-े से मुक्ति मिल पाती तो श्वा-ा जो मुक्ति मिल-ी चाहिए जो आजिव-ा -ाज्-ा रहते है। मध्यजाल में भी साहित्य में व्यंज्य चि-त-ा दिजायी देता है। जबीर -े भी अप-े साहित्यरूपी दोहों में सामाजिज बुराइयाँ, पाजंड, और झुठे - मक्जार लोजों जा पर्दाफाश जिया है। जबीर जो हिंदी जा प्रथम व्यंज्यजार मा-ा जाता है। युजचि-त-ा जे साथ उ-ाजा व्यंज्य देजिए -

जरता था तो क्यु रह्या, अब जरी क्यू पछ़ताई।
बोवै पेड़ बबूल जा, अब जहा तै जाई।।[6]
पोथी पढ़ि पढ़ि जज मुवा, पंडित भया -ा जोई।
एजै अषिर पीव जा, पढै सु पंडित होई।।[7]
मुंड मुंड़ावत दि-ा जए, अजहूं -ा मिलीया राम
राम -ाम जहु क्या जरै, जे म-ा जे औरे जाम।।[8]

मुल्ला मोलवियों, पण्डे - पुजारियों, जलत धार्मिज रूढ़ियों, माला फेर-ेवालों, मुंड़-ा, मुसलमा-ों जे रोज़ा - -ामाज, जीवहत्या, मांसाहार, जोहत्या, स्पृश्य - अस्पृश्य आदिपर जबीर जा व्यंज्य प्रहार जरता हुआ संदेश - सुधार जी तरफ इंजित जरता है।

'सूरदास' जे जाव्य में भी जोपियों -े उध्दव जी जिल्ली उड़ायी है। 'तुलसीदास' जे जाव्य में रामचरितमा-ास में समसामयिज सामाजिज विजृतियों जी व्यंज्यात्मज अभिव्यक्ति मिलती है।

जेती -ा जिसा-ा जो भिजारी जो -ा भीजबलि
ब-िज जो -ा ब-िज -ा चाजर जो चाजरी
ज़ीविजा विही-ा लोज सीद्यमा-ा सोच बस,
जहै एज एज-ा सौं जहा जाई जा जरी।[9]

हिंदी व्यंज्य जा -ावो-मेष भारते-दु युज में हुआ। यह वह जाल था जिस जाल में व्यक्ति आर्थिज प्राजृतिज धार्मिज स्तर पर लड़जडा रहा था। साथ ही अंज्रेजों जे शोषज -ीति जे जारज त्रस्त होता हुआ परिवर्त-ा चाहता था। इसी पार्श्वभूमिपर साहित्यजार जा स्वर प्रहारज हो उठा। भारते-दु प्रथम साहित्यजार जहलाये जि-हो-े

अंग्रेज शास-ा जी शोषज वृत्ति, ढूट-ीति, भारतीय ज-ाता जी सांस्ढृतिज दासता, पश्चिम जा अंधा-ुजरज आदि राजजीय तथा सामाजिज चेत-ापर व्यंज्य जसा। अंग्रेज, पुलिस, शिजित -ावयुवजों जे संत्रास जो उ-्हों-े जाव्य में उतारा।

जपट जटारी जिस में पुलिस
क्यो सजी सज्ज-ा, -ाहीं पुलिस।
ती-ा बुलाये तेरह आवें
-िज़ - -िज़ विपदा आि-ि सु-ावें।
आजों फूटे, भरा -ा पेट
क्यों सजी सज्ज-ा, -ाहीं ग्रेजुएट।[10]

'स्वर्ज में विचारसभा जा अधिवेश-ा' व्यंज्यात्मज -िबंध में स्वामी दया-ा-द सरस्वती और जेशवच-द्र से-ा जे धर्मसुधार जार्यक्रमों जो संस्ढृति विरोधी मा-ा-ेवाले पोंजा - पंडितोंपर तीज्ज प्रहार जिये है। 'बालढृष्ज भट्ट' जे -िबंध राज-ैतिज, सांस्ढृतिज और सामाजिज स्तरपर आलोच-ा जरते हैं। वजिल -िबंध व्दारा ब्रिटीश साम्राज्य पर व्यंज्य जसा है। 'बालमुंढ़ुद जुप्त' -े 'एज दुराशा' व्यंज्यात्ज -िबंध में राजा - प्रज़ा जे आदर्श संबधवाले भारत देश में ही राजा - प्रज़ा जें बीच जी दूरी जा वर्ज-ा है। शिवशम्भू शर्मा जो लजता है जि जिस प्रजार ढृष्ज जे साथ प्रजा होली जेलती थी उसी प्रजार राजा जे साथ होली जेली जाये।

स्वातंत्र्योत्तर जाल में साहित्यजार जी लेज-ी जे प्रहार से जीव-ा जा हर जो-ाा व्यंज्य से जत - विजत हो उठा। जविता जे जेत्र में देजा जाय तो -िराला, दि-ाजर, हरिवंशराय बच्च-ा, जजा-ा-ा माधव मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा आदि जविजजों -े अप-ी जविता जे माध्यम से राज-ीतिज, आर्थिज, सामाजिज, सभी जीव-ा जे पहलुओं पर जहाँ भी प्रहार जी आवश्यजता हैं, जिया है। '-िराला' जी 'वह तोडती पत्थर' जविता अमिर - जरीब भी जाई पर व्यंज्य जसती है। साम-े जर्द झाडी में बड़ा सा बंजला है और बंजले जे साम-े ही दोपहर जी जर्मी में सडज जे जि-ारे पत्थर तोड-ेवाली महिला मजदूर-ा। -िराला जा संघर्ष पूंजीवादी जे जिलाफ है। 'ढुढ़ुरमुत्ता' जविता एज -ावाब जे बजीचे में अ-ेज रंजो जे सुजंधित फुलों जे बीच फारस जा जुलाब भी था। उ-्हें उपेजित -ाहीं रजा जा सजता। 'हरिवंशराय बच्च-ा' जी जविता 'बुध्द और -ाचधर' में जवि -े व्यंज्य से इंजित जिया है जि लोज बुध्द जे आदर्श और सिध्दा-्त तत्व समझे बि-ाा ही अप-ाा ड्राईंज रूम बुध्द जी मूर्ति से सजाते है। 'दि-ाजर' जा व्यंज्य भी जीव-ा जी ढुरूपता प्रहार जरता है। उपदेशजों उपदेश -ा दे-े जी सलाह देते हुए वे जहते हैं -

मुजरिम होजर मुजरिमों जो
सुधार-े जा जाम
यह भी एज स्वांज है
और यह स्वांज हम सभी लोज
जरते हैं।[11]

'जजा-ा-ा माधव मुक्तिबोध' मा-ाव जाति जा सत्य और आदर्शो जी -िर्मम उपेजा पर प्रहार जरते है।

सप-ों जो आते सब, चिरी जयी फाडी जयी।
बाजी सब जोल है, जि-्दजी में झोल हैं।[12]

'सत्यं - शिवं - सु-्दरम्' 'रामविलास शर्मा' जी बालजीत शैली में लिजी जविता महायुध्दजाली-ा स्थितिपर व्यंज्यघात जरती है।

हिंदुस्ता-ा हमारा है,
प्राजों से भी प्यारा है,
इसजी रजा जौ-ा जरे,
संतमेंत में जौ-ा मरे।[13]

देशप्रेम जी बातें जर-े वाले बलिदा-ा जे समय आ-ेपर टालमटोल जरते हैं। 'जोदा-ा' (प्रेमचंद) जे पंडित दातादि-ा पाप और पुज्य जे व्याज्याता, धर्म जे प्रहरी, स्वर्ज - -ारज जे ठेजेदार है। 'भजवतीचरज वर्मा' जे 'टेढ़े - मेढ़े रास्ते' राज-ीतिज दाँवपेच, मुजौटावाद और स्वार्थपरता जा चित्रज है। 'अमृत और विष' (अमृतलाल -ाजर) में पात्र पुत्ती जुरू परम्परावादी पोंजा पंडित जा प्रति-िधित्व जरता तो है जिंतु उसीजी जमजोरी यह भी है जि -ावि-ाता जो अस्विजार जर-े जा सामर्थ्य भी -ाहीं रज पाता। 'सरोजि-ी प्रितम' जे सुदामा जा व्दारपाल दर्श-ा व्यंज्य रच-ाा में व्दारपालजो जुश जर-े जी बात जहजर व्यंज्य जसा जया है जि भीतर जी सब जा-ाजारी उसे ज्ञात होती है। 'बसौजियोवाली इमारत' (रमेश बजी) आधुि-ाज म-ुष्य जीव-ा जे जोजलेप-ा -िरर्थजता, मुल्यही-ाता और दोहरेप-ा पर प्रहार है। पति - पत्-ी जा जटा हुआ, टूटा हुआ जिव-ा पर व्यंज्य जसा जया है।

'एज पति जे -ोटस् - महे-्द्र भल्ला' जा उप-्यास संभोजीय मुद्राओं से उभर-ेवाली बोरियत और -िरर्थजता जा तीजा बोध है। 'राजदरबारी' 'श्रीलाल शुक्ल' जा स्वतंत्रता परवर्ती भारतीय समाज जी मुल्यही-ाता व्यंज्यात्मज ढंजसे प्रस्तुत जरता है। सहजारी संस्था, चु-ाव, पंचायत बँज, पुलिस, शिजा संस्थाएँ, प्राध्यापज, प्राचार्य, संचालज मंडल, -्यायालय, वैद्य, सरजारी -ौजर, डॉक्टर, दुजा-दार, व्यापारी, अफसर, सत्तारूढ दल, विरोधी दल, युवाजजत, पंचवार्षिज योज-ााएँ, प्रेम, आंतरर्राष्ट्रीय स्थिति, फिल्म, पहलवा-ा, रिक्शावाले, अजबार, जुंडे, विज्ञाप-ा, धर्म और बुध्दिजिवियों जी पलाय-ा प्रवृत्तिपर जरारा व्यंज्य है। 'शिवप्रसाद सिंह' जा 'अलज अलज बैतरजी' उप-्यास जर्जर मा-्यताओं और पुरा-े -ैतिज मा-दडोंपर तीव्र प्रहार जरता है। जो आज भी ज्रामस्थों जे जीव-ा में मौजुद है। 'रामदरश मिश्रा' जा 'जल टूटता हुआ' उप-्यास आजादी जे बाद जाँवों जे बदलते हुए जीव-ा सम्बधों जे बदलाव, मूल्यों जे विघट-ा तथा जीव-ा जे टूट - टूटजर तार तार हो-े जी स्थितिपर प्रहार जरता है। 'सूर्यबाला'-े भी आप-ी व्यंज्य रच-ाओं में समाज, राजि-ाति, शैजजिज संस्था आदिपर व्यंज्य जिया है। बडे लोजों जी मा-ासिजता उ-जा हायफाय जा दंभ सोफा जे माध्यम से दृष्टव्य है। सोफा जराब हो जायजा (जव्हर, स्प्रिंज) इसलिए उसे इस्तेमाल भी -ाहीं

ज र-ने देते। 'उषाबाला' जी रच-ााएँ फेअरवेल पार्टी, जॉलबेल, -ााइट क्लब, मध्यमवर्जीय सोफोस्टिजेटेड समाज जीव-ा जी विसंजतियाँ आज्रोशात्मज ढंज से अभिव्यक्त ज रती है। 'बाबू अन्नपूर्जा-ांद' लिजित 'अजबरी लोटा' हास्यव्यंज्यपूर्ज जहा-ाी अंज्रेजो जी प्राची-ा वस्तुओं जा संज्रह ज र-ो जी शौज प्रवृत्ति पर हास्य प्रस्तुत ज रती है। 'हि-दुस्था-ाी लोटा भी आजिर वही जिरा, जहाँ हिंदुस्था-ाी आदमी जिरा ज रते थें।'[14] हिंदुस्था-ाी लोजों जी झुज्जर -ाम-ा ज र-ो जी प्रवृत्ति पर व्यंज्य जिया जया है। '-ाया साल मुबारज' (अमृतराय) व्यंज्यपाठ -ाया साल मुबारज जह-ो वाले लोजों पर व्यंज्य जिया हैं जो भूल जाते हैं जि -ाया दि-ा पुरा-ों जी तरह जब्र में पहुँच जायजा। पुरा-ो साल जो दु:जमय मा-ते है और -ाये साल जो आ-ोवाले सुज जी सिहर-ा। 'भजवतीचरज शर्मा' लिजित 'मुजलों -ो सल्त-ात बज्श दी' मुजल शासज और उ-ाजा मिथ्याभिमा-ा जा पर्दाफाश ज रती है। हरिशंज र परसाई आधुनिज युज चि-त-ा में व्यंज्य ज र-ो में माहिर है। 'मेघदूत जी पुस्तज समीजा' 'शरद जोशी' लिजित रच-ाा आलोचजों जे रूचि अरूचि पर ज रारा व्यंज्य ज रती है जि आलोचज मूल तथ्य जो छोड़ अप-ाी रूचि - अरूचि जो थोपते हुए रच-ाा जे जुज - अवजुज जा मूल्यांज-ा ज रता है। 'श्रीलाल शुक्ल' जी जहा-ाी 'अंजद जा पाँव' मित्र जो तथा बॉस जो स्टेश-ा छोडते वक्त जे -ाजारा जा व्यंज्यात्मज चित्र है। मा-ाहतों जी उचित अ-ाुचित चापलूसी और दूर्बल रेलव्यवस्थापर व्यंज्यात्मज प्रजाश डाला जया है। 'लतीफ घोंघी जा इलाज जोष' ज-ाता जी संवेद-ाा जा अ-ाुचित लाभ उठा-ोवाले आज जे साहित्यजारों पर ज रारा व्यंज्य है। जैंसर जैसी जंभीर बीमारी जा बहा-ाा ब-ााज र अ-ाुचित तरीजे से चंदा जमा ज राते है। 'घूस एज चिज-ााई है' आधुनिज युज चि-त-ा जा सर्वश्रेष्ठ व्यंज्य जहा जा सजता है। लेजज रवी-द्र जालिया स्पष्ट ज रते हैं जि आज रिश्वतजोरी से ही सब जाम ब-ाते है। स्वातंत्र्य से-ाा-ाी जा बि-ाा रिश्वत जे पेंश-ा -ाहीं मिलती। घूस मृतसंजीव-ाी है, सुरा है, लोहास्तव है। च्यव-ाप्राश है। अब घूस ही देश में विजास जी जति तेज ज र सजती है।[15]

-ायी व्यवस्था-ाुसार ज र्मचारी सरजार जो वेत-ा देंजे, -ाौजरियाँ जुले आम -ाीलाम होजी भ्रष्ट अभियंता, भ्रष्ट ठेजेदार, झूठी जवाही, तबादले जा दर तय होजा ताजि म-ाचाहा स्टेश-ा हासिल हो। ऐसे भ्रष्ट राज-ाीतिज, सामाजिज, शैजजिज, -ाायालयी-ा व्यवस्थापर तीजा व्यंज्य है।

'चिजित्सा जा चक्जर' डॉक्टर हजीम और वैद्य पर ज रारा व्यंज्य है। उदर शूल पर हरजे जे अलज अलज -ाुस्जे म-ाोरंजज है। पेट में दर्द से मुक्ति जे लिए एज डॉक्टर जी दाँत उजडवा-ो जी सलाहपर लेजज जो श्रीमती जी बोलती है तुम्हारी बुध्दि जही घास चर-ो जयी है? आज जोई जहता है दाँत उजडवा डालो, जल जोई जहेजा, सारे बाल उजडवा डालो, परसो जोई डॉक्टर जहेजा, -ााज -ाुचवा डालो, आँज -िजलवा दो। यह सब फिलूल है। जा-ाा ठिजा-ो से जाओ, पंद्रह दि-ा में ठिज हो जाओजे।[16] 'यह -ायी जविता है' 'संसारचंद्र' लिजित व्यंज्य रच-ाा -ायी जविता और अजविता जे -ाामपर उल - जलुल लेज-ा ज र-ोवालो, भाई - भतिजावाद पर ज रारा व्यंज्य है। 'बेवजूफी जा जोर्स' 'सत्यपाल सिंह' व्दारा रचित आधुनिज व्यंज्य चिंत-ा राज-ाीतिज्ञ रिश्वतजोर, -ाशीले पदार्थो जे विज्ञाप-ा दाता, परीजा प्रजाली, चिजित्सा, क्रिजेट, बल्लेबाज, फिल्मनिर्माता जिसप्रजार ज-ाता जो बेवजूफ ब-ााते हैं, बेवजूफो पर व्यंज्य जसा जया है। 'अभिम-ाु अ-ांत' जा 'धमाजा', मि-िस्टर जे घर जे साम-ो घर, प्रदर्श-ा जारियों जे आवाज, अश्रुजैस, धुआंधार वातावरज में -ोता जी आवाज, पारिवारीज परिवेश में पति - पत-ाी जी -ाोंज - झोंज जा व्यंज्यात्मज युजी-ा चित्रज ज रते हुए मा-ाव जी जीव-ा जी-ो जी इच्छा तथा संजट जाल में जोजिम उठा-ो जी हिम्मत जे सत्य जा भी चित्रज है।

-िष्जर्षत: प्रारंभ से आजतज हम देज रहे हैं जि युजचि-त-ा जे अ-ाुसार जो व्यंज्य साहित्य में -ाजर आता है वह अ-ााय और अव्यवस्था जे विरूध्द अभिव्यक्ति ज रता है। व्यंज्य वह तलवार है, जो मा-ाव जीव-ा जे ही -ाही देश - राष्ट्र और विश्व जे हर पहलू जो तराशती है और उ-ाहे अच्छा आजार देती है। व्यंज्य जे जारज मा-ाव मूल्यों जी रजा होती है। व्यंज्य मा-ाव जुजों जी रजा ज रते हुए पलाय-ा प्रवृत्ति जो रोजता है। मुसीबत, संजट, संघर्ष, उलझ-ा, संत्रास, जुठाँओ से त्रस्त मा-ाव जो सही रास्ता दिजलाता है।

इस तरह व्यंज्य सामाजिज स्वास्थ जो दृढ ज रता है। एज सडा हुआ आम पूरे आम जी पेटी जो सड़ाता है, तो उस सड़े हुये आम जो -िजाल-ाा जरूरी हो जाता है ताजि बाजी आमों जी रजा हो सजे। यही जाम व्यंज्य ज रता है।

व्यंज्य समाज जी बुराइयाँ, अ-ााय, जराबी, भ्रष्टाचार, सड़ी - जली परम्परा आदि बातों जो जत - विजत ज रता है और मा-ाव जीव-ा जो सही दिशा जी ओर उ-मुज ज रता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिंदी साहित्य जोश भाज - 3 रामजेलाव-ा पांडे 2 एज व्यंज्य यात्रा प्रा. रा. वा. पाटील 41 3 सदाचार जा तावीज हरीशंज र परसाई 36 4 आइडिया ऑफ जॉमेडी जार्ज मेरिड़िथ 76 5 हिंदी व्यंज्य बदलते प्रतिमा-ा डॉ तेजपाल चौधरी 51 6 जबीर ज्रंथावली सं. डॉ. भजवतस्वरूपं मिश्र 131 7 जबीर ज्रंथावली सं. डॉ. भजवतस्वरूपं मिश्र 150 8 जबीर ज्रंथावली सं. डॉ. भजवतस्वरूपं मिश्र 168 9 जोस्वामी तुलसीदास मायाप्रजाश पांडेय 23 10 भारते-दु समज्र सं. हेमंत शर्मा 256 11 भारत जा यह रेशमी -ाजर - उपदेशज संचयिता - दि-ाजर 163 12 जविता-तर सं. जजदीश जुप्त 62 13 तारसपृज सं. अज्ञेय 252 14 -ावी-ा हास्यव्यंज्य सं. सुरेश आचार्य 27 15 -ावी-ा हास्यव्यंज्य (घूसएज चिज-ााई है) रविंद्र जालिया 87 16 -ावी-ा हास्यव्यंज्य (चिजित्सा जा चक्जर) बेढब ब-ाारसी 62